Title: Regarding plight of cotton growers.

श्री रतिलाल कालीदास वर्मा (धंधुका) : अध्यक्ष महोदय, गुजरात के अंदर आज किसान सी.सी.आई. की नीति के कारण बहुत परेशान हैं। हजारों की संख्या में उन्होंने जुलूस निकाला और कॉटन को रास्ते पर जलाया। इसलिए मुझे कहना पड़ रहा है कि :-

"किसान देश की शान हैं, किसान देश की आन हैं,

फिर भी वे परेशान हैं, पूरे देकर दाम, करो उनका सम्मान,

मत करो उनका अपमान, किसान हैं महान। "

वे सपोर्टिंग प्राइस चाहते हैं। वे कॉटन का निर्यात चाहते हैं।

वे कॉटन के आयात पर ड्यूटी बढ़ाना चाहते हैं और सी.सी.आई. के द्वारा गुजरात में अधिक केन्द्र खोलना चाहते हैं। दूसरे राज्यों से जो कॉटन हमारे प्रदेश में आ रही है, वे चाहते हैं कि वे राज्य खुद अपने यहां उसे पर्चेज करें। इसके साथ-साथ उन्होंने बड़ा अच्छा नारा गुजरात में दिया है - देश के हम भंडार भरेंगे, लेकिन दाम पूरे लेंगे। गुजरात का किसान, देश का किसान इस देश के लिए काम करता है, मरता है। लेकिन फिर भी वह आत्म हत्या करने को मजबूर हो रहा है। यह मौका गुजरात के किसानों को न मिले इसके लिए मैं भारत सरकार से निवेदन करूंगा कि वह इस सम्बन्ध में कदम उठाए।

श्री महेश कनोडिया (पाटन) : अध्यक्ष महोदय, मैं भी इसका समर्थन करता हूं इसलिए मेरा नाम भी इसके साथ एसोसिएट किया जाए।â€¦ (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप लोग चुप बैठेंगे तो सभी को बोलने का अवसर दूंगा। It is a very important issue. One should allow it. But this should not be the common method. From the next Session, if I am there, I shall follow strictly the BAC Resolution. Only matters of urgent public importance and 15 maximum per day will be allowed.